अध्याय - पहला

डॉ॰ शंकर शेष

व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

- नाटककार डॉ॰ शंकर शेष -

- व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

१-१-१ जन्म :-

डॉ॰ शंकर शेष का जन्म २ अक्तूबर, १९३३ में बिलासपुर के सामन्तमाहो महाराष्ट्रीय परिवार में हुआ । शंकर शेष का पालन - पोषण संयुक्त परिवार के अनुशासन में हुआ । इनके पिता का नाम श्री॰ नागोजीराव और माता का नाम सावित्री देवी था ।

१-१-२ शिक्षा :=

डॉ॰ शंकर शेष की आरंभिक शिक्षा बिलासपुर में हुई। किशोरावस्था में ही उन्होंने कविता कहानी लिखना आरंभ कर दिया था। इसे हम साहित्य जीवन का बीजारोपण कहेंगे। आरंभिक शिक्षा की उस अवस्था में उन्होंने रामायण तथा महाभारत की कथाओं में दिलचस्पी ली। उच्च - शिक्षा के लिए नागपुर के मारिस कालेज में दाखिल हुये। नागपुर आकर उन्हें एक साहित्यिक परिवेश मिला। डॉ॰ विनयमोहन जैसे गुरु मिले। डॉ॰ शंकर शेष ने सन १९५६ को मई में बी॰ ए॰ ऑनर्स की उपाधि नागपुर विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में प्राप्त की।

१-१-३ आदतें :-

डॉ॰ शंकर शेष का अपनी कलम पर काफी भरोसा

था। वे निरंतर अपने काम में लगे रहते थे। वे घर में कभी किसी को बिना काम कर देखते तो परेशान हो उठते थे। डॉ॰ शंकर शेष अपनी समूचि जिंदगी में कभी आलसी एवं घमंडी तो नहीं बने, विनम्र मात्र रहे। जिंदगी में कुछ पाना हो तो जूझना आवश्यक है, ऐसा माननेवाले डॉक्टरसाहब ने संघर्ष पर गहरी श्रध्दा रखकर अपना जीवन यापन किया।

डॉ॰ शेष अपने परिवारवालों से मित्र की तरह बर्ताव करते थे। घर का वातारवण हँसी मजाक से भरा और आनंदी रखाते थे। अपने बच्चे तथा पत्नी सुधाजी को अपना लेखान पढ़कर दिखाते थे। पत्नी सुधा शंकर का कथन है - डॉ॰ शंकर शेष कोई भी नाटक लिखाने से पहले जब उसके विषय में सोचते थे तब से लेकर लिखाने की प्रक्रिया तक कई बार बातें होती थी और लिखाने के बाद वे अपने परिवार के साथ नाटक पढ़ते थे। जिंदगी का आस्वाद लेने में डॉ॰ शंकर कोई कसर नहीं छोडते। आने - जानेवाले हर व्यक्ति के साथ घुल-मिलकर बाते करते थे। पराये लोगों को अपना बना लेने की कला उन्हे अवगत थी। अध्यापक होते हुए भी कालेज के विधार्थी या कार्यालय - कर्मचारियों के साथ मित्रात्वपूर्ण व्यवहार करते थे। वे अजातशत्रू इन्सान थे।[२] किताबों को बटोरना उनका एक शौक था। प्राचीन ग्रंथों में उलझे जाते थे। किताबों को खारोदना एक शौक था। महाभारत ग्रंथ में दिलचस्पी लिया करते थे। " एक और द्रोणाचार्य " " कोमल गांधार, " " धर्म क्षेत्रे कुरू क्षेत्रे ", ये रचनाएँ इसी का फल है। किताबों के इस प्रेम ने उन्हे उनके गृहस्थी जीवन पर भी आक्रमण कर दिया था। गृहस्थी की अपेक्षा किताबों का बोझ अधिक रहता। सुधाजी समझाकर हार गयी।

डॉ॰ शंकर शेष रोक - ठोक - ठेठ आदमी थे। हँसी - मज़ाक में बेहद रस लेनेवाले डॉक्टरसाहब ठहाके के साथ खुलकर हँसते थे। आप एक अच्छा वक्ता भी थे। अपने भाषण का प्रभाव श्रोताओं पर छोड देते थे। भाषण में अभिनय आ जाता था। पर वे जब अपनी पूरी भाव - भंगिमा के साथ किसी नाटकीय दृश्य को सुनाते, तब समूचा नाटक एकपात्री अभिनय में परिवर्तित होता था।

डॉ॰ शंकर शेष उदारमतवादी थे। वे निर्देशकों को उचित आजादी देते ताकि नाटक रंगमंचपर सफल हो।

१-१-४ विवाह :-

डॉ॰ शंकर शेष बी॰ ए॰ आनर्स की उपाधि प्राप्त करने के बाद मध्यप्रदेश की शिक्षा सेवा में सहाय्यक प्राध्यापक के रूप में भर्ती हो गये। जहाँ वे पढ़ते थे वहीं अर्थात मॉरिस कॉलेज नागपुर में ही वे अधिव्याख्याता बने। इसी बीच रायपुर के डॉ॰ रामचंद्र नारायण अत्रे की कन्या सुधा से डॉ॰ शंकर शेष का विवाह १९ दिसम्बर १९५८ में संपन्न हुआ।

१-२-१ कृतित्व :-

डॉ॰ शंकर शेष ने अध्ययन के साथ लेखन को महत्व देकर अपना लिखने का काम निरंतर जारी रखा। अब कविता, कहानी की, जगह एकांकियों ने ली। वे आकाशवाणी के संपर्क में आये। आकाशवाणी के संपर्क के कारण उनके दोस्त एवं

अध्यापक उनसे कुछ उम्मीद रखते थे। डॉ॰ शेष उन दिनों चर्चा का विषय बन गये थे। कालेज विश्व में सहपाठियों ने उन्हे लेखक की संज्ञा दी। शंकर शेष इस नाम के साथ " नाटककार" लिखवा देने का सारा श्रेय भी इस कालेज को है। डॉ॰ शेष का पहला नाटक मूर्तिकार [१९५०] इन्हीं दिनों की उपज है। कालेज गैदरिंग के लिए खोला गया यह नाटक काफी सफल सिध्द हुआ। " मूर्तिकार " से जारी उनकी साहित्य सेवा निरंतर गतिशील नजर आती है।[५] मेडिकल कालेज के गैदरिंग में मूर्तिकार जो अब तीन अंकी नाटक के रूप में सफल हुआ, वह श्रीनगर में संपन्न नाटक प्रतियोगिता में सफलता से खेला गया। इसके पश्चात नाटकों का सिलसिला जारी हो गया। बेटोंवाला बाप, नई सभ्यता के नये नमूने, रत्नगर्भा, विवाहमंडप, हिन्दी का भूत, तिल का ताड एक के बाद एक लगातार नाटकों का सृजन होता गया।

डॉ॰ शंकर शेष शासकीय सेवा से समय पाते ही कुछ न कुछ लिख ही डालते। उन्होंने अपना अनुसंधान कार्य जारी रखा। अनुसंधान को महत्व देकर उन्होंने डा॰ गोपाल गुप्ता के निर्देशन में अपना अनुसंधान कार्य सन १९६१ में पूरा किया। उनके " हिन्दी और मराठी कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन " शोधपरक प्रबंध को १९६१ में पीएच॰डी॰ उपाधि के लिए गौरवान्वित किया। " छत्तीसगढी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन ", कुछ कविताएँ एवं कहानियाँ डॉ॰ शंकर शेष को सन १९५९ से १९६५ तक के काल की उपलब्धियाँ मानी जाती है।

डॉ॰ शंकर शेष की असाधारण प्रतिभा देखकर " शिक्षा सेवा विभाग " से उनकी आपत्ति जाती। अनुसंधान संस्था

संस्था में प्रतिनियुक्ति हुई " । उनको अनुसंधान अधिकारी का पदभार सौंपा दिया । डॉ॰ शंकर शेष ने तीन साल तक अनुसंधान अधिकारी का काम देखा । सन १९६८ में डॉ॰ शंकर शेष मध्यप्रदेश सरकारी सेवा में दाखील हुए । भोपाल के कालेज में दो साल तक हिन्दी के अध्यापन का कार्य किया मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ, अकादमी, भोपाल में सहाय्यक संचालक के रूप में उनकी नियुक्ति हुई । इस काल में उन्होंने अनेक श्रेष्ठ रचनाएँ की । उन्होंने अपना लेखन कार्य जारी रखा । डॉ॰ विनय के कथनानुसार १९७० में " बिन बाती के दीप " नाटक से उनका नाटयलेखन पुनर्जीवित हुआ । चार वर्षों की कालावधि में [१९७० से १९७४ तक] डॉ॰ शंकर शेष ने नौ नाटक, लिखे । जिसमें " बाढ का पानी " या " चन्दन के दीप " तथा " बंधन अपने अपने " मध्यप्रदेश शासन व्दारा पुरस्कृत हुए । आकाशवाणी भोपाल से अधिकांश नाटक प्रसारण भी हुए । " खजुराहों का शिल्पी " का राष्ट्रीय प्रसारण भी हुआ था । डॉ॰ शंकर शेष के " मराठी शिक्षण पाठ " आकाशवाणी से प्रसारित हुये थे । वे भी लोकप्रिय हुए । " अभिशाप्त गांधार, " त्रिभुज का चौथा कोन " का प्रसारण बहुचिर्चित रहा । " एक और द्रोणाचार्य " का मंचन काफी काल तक जनमन पर छाया ।[६] मध्यप्रदेश शासन ने " बंधन अपने अपने " पर ग्यारह सौ रूपये का पुरस्कार शेष को दिया ।

" त्रिभुज का चौथा कोन ", " रक्तबीज ", "चेहरे" " आधी रात के बाद " आज भी दूरदर्शन पर चर्चित है । सुनिलकुमार लवटे लिखते हैं - " बंबई जैसे महानगर में आने के बाद उनके व्यक्तित्व के नये आयाम खुल गये । चित्रपटों के लिए कथा, संवाद लिखना दूरदर्शन के लिए रूपक लिखना , राजभाषा विभाग में नयी योजनाएँ कार्यान्वित करना, नित्य नव-निर्माण की उनकी सहजवृत्ति के कारण उनका व्यक्तित्व बहुमुखी बना ।

बम्बई में शंकर शेष का बडा स्वागत हुआ। उनके " घरौंदा " नाटक को कथावस्तुपर फिल्म बन गयी। " बिन बाती के दीप " के आधार पर " घरौंदा " के निर्देशक श्री· भीमसेन " घुटन " नाम को फिल्म बना रहे हैं। उनके " दूरियां , " घरौंदा फिल्म को आशिर्वाद पुरस्कार भी मिला है। वी· शांताराम, " खजुराहों का शिल्पी नाटक " के आधार पर " खजुराहों का सपना " फिल्म की योजना बना चुके थे।

सन १९५५ से सन १९८१ तक की साहित्य - यात्रा में हिन्दी के सुप्रसिध्द नाटककार शंकर शेष ने बाईस नाटक, सात एकांकी, दो बाल नाटक, चार अनुदित नाटक, चार उपन्यास, तीन अनुसंधान प्रबंध, एक संकीर्ण, दो पटकथाएँ , एक पटकथा संवाद लिखकर हिन्दी साहित्य को समृध्द करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य सेवा में उन्होंने जीवन के यथार्थ को उद्घाटित किया।

॥ रचनाएँ ॥

	नाटक	सन
१	मूर्तिकार	१९५५
२	रत्नगर्भा	१९५६
३	नई सभ्यता के नये नमुने	१९५६
४	बेटोंवाला बाप [अनुपलब्ध]	१९५८

	नाटक	सन
५	तिल का ताड़	१९५८
६	बिन बाती के दीप	१९६८
७	बाढ़ का पानी	१९६८
८	बंधन अपने अपने	१९६९
९	खाजुराहों का शिल्पी	१९७०
१०	एक और द्रोणाचार्य	१९७१
११	फन्दी	१९७१
१२	कालजयी	१९७३
१३	घरौंदा	१९७५
१४	अरे! मायावी सरोवर	१९७४
१५	रक्तबीज	१९७६
१६	पोस्टर	१९७७
१७	राक्षस	१९७१
१८	कोमल गांधार	१९७९
१९	आधी रातके बाद	१९८१
२०	त्रिकोण का चौथा कोन [अनुपलब्ध]	

उ प न्या स

oooooooooo

१	चेतना	१९७४
२	खाजुराहों की अलका	१९७१
३	धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे	१९८०
	[भीष्म की आत्मकथा]	

अनुसंधानात्मक प्रबंध

१ हिन्दी और मराठी कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन १९६१

२ छत्तीसगढ़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन १९६५

३ आदिम जाति शब्दसंग्रह एवं भाषाका शास्त्रीय अध्ययन १९६७

संकीर्ण

समृध्दि की ओर ---

	पटकथा	सन
१	घरौंदा	१९७८
२	दूरियाँ	१९७९

पटकथा संवाद -

१ सोलहवा सावन ·

डॉ· विन, डॉ· शंकर शोष पर तैय्यार होनेवाली ग्रंथावली का संपादन कर रहे है। डॉ· विनयलिखाते हैं " एक और द्रोणाचार्य," " पोस्टर", " आधी रात के बाद " " चेहरे ", " रक्तबीज "," और " कोमल गांधार " बहुत

चर्चित हुए है । इन नाटकों से डॉ॰ शेष की चिंतनपध्दति समाज की दिशा में स्पष्ट होती है। वे एक ऐसे रचनाकार है जिन्होंने कलात्मकता की रक्षा करते हुए अपनी बात को पूरी शक्ति के साथ कहा है।[१०]

डॉ॰ शंकर शेष के नाटक समकालीन नाटककारों में मंच, सम्प्रेषण, कथ्य, शिल्प, भाषा, अभिनेयता आदि की दृष्टि से प्रयोग - धर्मी प्रसिध्द हुए है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक साहित्य के विकास में डॉ॰ शंकर शेष का योगदान महत्वपूर्ण है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, रंगमंच जहाँ भी संभव हो, उन्होंने नाटक साहित्य को प्रतिष्ठा देने की कोशिश की। आज समाज में फैला स्वार्थ, भाई - भतीजावाद, भ्रष्टाचार, महँगाई, घूसखोरी कालाबाजारी के कारण समाज का नैतिक अवमूल्यन होता जा रहा है। इन बातों को ध्यान में लेकर नाटककार डॉ॰ शंकर शेष ने अपनी नाट्यधारा को बहुमुखी बनाया। उनके " फन्दी ", " पोस्टर ", " चेहरे ", " एक और द्रोणाचार्य " जैसे नाटक हिन्दी नाटकों को प्रायोगिक रंगभूमि प्रदान करने में सफल हो सके।

आज का सामाजिक जीवन आस्था, अनास्था का द्वन्द्व है, निराशा और असुरक्षा की भावना हर एक के मन में है। विरोध एवं विद्रोह की भावना मन में है। कुण्ठा, विघटन, अजनबीपन, विद्रूपता से आंतकीत, साशंकित है । तो शंकर शेष नाटक में ऐसा वातावरण प्रस्तुत करने को अभिशाप्त है। इस संक्रमणकालीन धूंधा को शेष ने संवेदना की आँच में तपा कर आज के व्यक्तित्व और उसकी आत्मा के घुटनशील

स्वरों को खुलकर वाणी दी है।[११]

यही सच है कि डॉ॰ शंकर शेष एक संपूर्ण लेखक थे। डॉ॰ शंकर शेष का साहित्यिक रूप में उनके समग्र कृतित्व का मूल्यांकन किया जाय तो वे बहुमुखी कलाकार थे। नाटक उनकी लेखनी की मूल प्रवृत्ति है। आधुनिक प्रवाह को लेकर उन्होंने " रेडियो, रूपक, दूरदर्शन - रूपक जैसी विधाओं की रचना की। " चेहरे " नाटक को देखकर आधुनिक साहित्य माध्यमों के तंत्र गति का पता चलता है। यही बात उपन्यास की भी है। " एक गार्बो " जैसी रचना से अनुवाद कौशल का प्रमाण मिलता है। अनुसंधान के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है वह उनकी अध्यवसायी सिद्ध करता है। इससे स्पष्ट होता है कि वे संपूर्ण लेखक थे।

डॉ॰ शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय यहाँ दिया है और " चेहरे " पर हम मुख्य रूपसे आगे चर्चा करने वाले है।

१-२-१ १] मूर्तिकार :-

सन १९५५-५६ में लिखा उनका पहला नाटक है। आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवार की विद्रूप भावनाओं को उभारनेवाला नाटक है। मिट्टी को आकार और सौंदर्य प्रदान करनेवाला मूर्तिकार अपने परिवार की दो वक्त की रोटी देने में असमर्थ है। यह नाटक पारिवारिक समस्याओं की गाथा है। पारिवारिक समस्याओं से जूझते निराश पति-पत्नी

पारिवारिक जीवन को दु:खद, दिशाहीन बना देते है। कुमारी माता नीलू के बच्चे का स्वीकार कर समर्पित प्रेम की पहचान कराता है। यह नाटक मध्यमवर्गीय जीवन की दस्तावेज है।

सामान्य जीवन में मनुष्य आदर्शोंपर टिक नहीं सकता। आखिर जीवन में समझौता करना ही पडता है। मूर्तिकार में नाटककार शेष ने नारी - जीवन का चित्रण कर स्वतंत्रता का संदेश दिया है।

१-२-२ २] रत्नगर्भा :-

रत्नगर्भा नाटक में नाटककार ने इला और सुनिल के जीवन संघर्ष की गाथा प्रस्तुत की है। सुनिल प्रतिष्ठित डॉक्टर है। पत्नी इला सुनिल को उच्च शिक्षा के लिए अपने जेवर बेचकर पैसों का प्रबंध करती है। विदेश जानेपर सुनिल अपनी पत्नी के प्रेम और पतिव्रता से एकनिष्ठ रहता है । इसी बीच स्टोव फटने की दुर्घटना में इला का खूबसूरत सुंदर चेहरा कुरूप हो जाता है। विदेश से लौटकर सुनिल यह सबकुछ देखता है। पर इला की निष्ठा, भोलापन , प्रेम , त्याग आदिसे प्रभावित होकर उससे अलग होना स्वीकार नहीं करता। लेकिन अपने मित्र जगदीश के बहकावे में आकर कुरूप इला से घृणा करने लगता है। नाटककार ने स्पष्ट किया है कि प्रेम और मन उन्नीसवी शताब्दी की बाते है। समाज में मनुष्य उपासक है· सुंदरता और धनका उसकी सौंदर्यानुभूति शारीरिक सौंदर्य तक सीमित है। वह आत्मिक सौंदर्य को देखने की कोशिश नहीं करता। इसी कारण सुनिल इला के जीवन से भयावह खेल खेलता है। आखिर इला का आंतरिक प्रेम, निष्ठा, त्याग सुनिल में परिवर्तन लाता है। संक्षेप में नाटक की यही कथावस्तु है। यह नाटक तीन अंकों में विभाजित है। कथा के प्रथम अंक में संघर्ष का आरंभ होता

होता है और द्वितीय अंक में संघर्ष का पर्याप्त विकास होता है। अंतिम अंक में संघर्ष अग्रेसर होकर समाप्त होता है।

नाटक में दर्शकोपर चरित्राचित्राण का प्रभाव अधिक पडता है। इला और सुनिल नाटक के प्रमुख पात्र है। माया, जगदिश, आत्माराम , गंगाराम , दावानल, जौहरदास, सिन्हा प्रासंगित पात्र है। सुनिल प्यार, त्याग, निष्ठा की अपेक्षा सुंदरता, पैसा हो अपना सर्वस्व मानता है। उसके चरित्र की यही दुर्बलता उसे पतनोन्मुख ले जाती है। वह शराबी, जुआरी, वेश्यागामी बनता है। " रत्नगर्भा " नाटक में सौंदर्य, धन, प्रतिष्ठा, निष्ठा, त्याग के संघर्ष को दिखाया है। दुर्बलता से ग्रस्त नारी जीवन शोकात्म बन जाता है। तब वह कहीं की नहीं रह जाती। भारतीय नारी की हैसियत से वह पति के फटकारने पर भी उससे निष्ठा बनाये रखती है। "भावना को जब भावना से विजित किया जाता है तो मनुष्यता का यशतिलक होता है लेकिन भावना पर जब स्वार्थ के सोलन भरे पैबंद लगाये जाते हैं तो मनुष्यता और उसके चिरपरिचित शाश्वत सत्य, प्यार के भाव भी पराजित होते है।[१२]

नाटक के संवाद संक्षिप्त सुबोध है । इस नाटक की भाषा, सरल, सुबोध बोलचाल की एवं कथा चरित्र विकास में उचित योग देती है। प्रतिष्ठित लोगों की मनोवृत्ति का पर्दाफाश करना नाटक का उद्देश्य है। साहित्य और शैली की दृष्टि से नाटक का महत्व असाधारण है।

१-२-३ ३] नयी सभ्यता के नये नमूने :-

डॉ. शंकर शेष ने इस नाटक में मिथक का प्रयोग

किया है। अन्यायो अत्याचारो पापो तत्वों का संहारक कृष्ण है। तथाकथित सज्जन लोगों के सत्य स्वरूपा का उद्घाटन कर स्पष्ट कर दिया है कि समाज द्रोही, दुराचारो लोगों की चाल किसो न किसी साजिश को लेकर चलतो है। नाटककार ने नाटक को यथार्थवादो बनाया है। कृष्ण का कथन है - बेईमानों को लूट लेना कोई अपराध नहीं है। आज तक मैंने जिनको लुटा है इतने सभ्य तरोके से लूटा है कि कोई अंगूलो तक नहीं उठा सकता। " आज को सभ्यता भी तो उसो को कहते है। जिसमें मुस्करा - मुस्कराकर आप किसो का गला काट लीजिए। आज यह पहचानना मुश्किल हो गया है कि किसो को मुस्कुराहट में अमृत है और किसीको मुस्कराहट में जहर "।[१३]

निष्कर्षत: नयो सभ्यता के नये नमूने नाटक में मिश्रक के व्दारा समकालोन समाज व्यवस्था एवं चारित्र्य को समस्या का उद्घाटन किया है।

१-२-४ ४] तिल का ताड :-

[सन १९५८]

हास्य - व्यंग्यात्मक शैलो में लिखा गया डा॰शो॰ष का पहला नाटक है। यह नाटक अप्रकाशित है। कभो - कभो उलझन से बचने के लिए आदमो सींग रचाता है। नाटक खोलता है। वह नाटक को उसको जिंदगो बनजाती है।

तिल का ताड नाटक तीन अंकों मे विभाजित है। प्राणनाथ इंजिनियर है। मकान मालिक धान्नामल से बचने के लिए मंजू नामक असहाय युवतो को बोबो बनने का नाटक करने को कहता

यह नाटक " तिल का ताड " बनता है और रंजना के बदले मंजू से शादी करनी पडती है।

संक्षिप्त में नाटक की यही कथावस्तु है। प्रतिष्ठा आदमी को बुझदिल बना देती है। इस बुझदिली से आदमी निरन्तर आतंक का शिकार होता है। प्राणनाथ की समूची कथा इसका प्रमाण है। प्राणनाथ और मंजू की कथा प्रमुख कथा है। ब्रह्मचारी और बाटलीवाला की कथा पतितपावन की कथा जैसी प्रासंगिक कथाएँ भी है। प्रासंगिक कथा का मुख्य कथा से कोई संबंध नहीं है। ये कथाएँ मुख्य कथा विकास में सहायक सिद्द नहीं होती हैं। ऐसी स्थिति में वे समांतर कथाओं जैसी लगती है। न कथा का आरंभ आकर्षक है, न अन्त। कथा में व्यंग्य की पर्याप्त संभावनाओं के होते हुए भी नाटककार ने कथा विकास में निराश ही किया है। १४

नाटक की भाषा सरल बोलचाल की है। हास्य - रस का निर्वाह कर व्यंग्यात्मकता की रक्षा की है। एक मध्यमवर्गीय परिवार में घटना घटित होती है। नाटक में देशकाल का वर्णन संवेदीय मर्यादाओं को ध्यान में रखकर किया है। मनोरंजन करना नाटक का उद्देश्य है।

१-२-५ ५] बिन बाती के दीप :-

[सन १९६०]

इस नाट्यकृति के माध्यम से नाटककार डॉ. शेषने स्त्री - पुरूष संबंधों की व्याख्या नये संदर्भ में करने का प्रयास किया है। किसी भी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा व्यक्ति को

चारित्रिक अधःपतन की ओर ले जाती है।

बिन बाती के दीप तीन अंकों में विभाजित है। इस नाटक में विशाखा और शिवराज के जीवन संघर्ष की कथा प्रस्तुत की है। शिवराज को राष्ट्रीय - स्तर का प्रसिद्ध कवि बनने की महत्वाकांक्षा पागल बना देती है। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह विशाखा के लिखे उपन्यास अपने नाम से छपाता है। आनंद शिवराज के इन कारनामों का परिचय विशाखा से करवाता है। पर विशाखा इस करतूत को विश्वास-घात नहीं मानती।

यहाँ डॉ॰ शेष ने महत्वाकांक्षा से निर्माण अनैतिक आचरण और असहाय्य स्थिति से प्राप्त सहारे के प्रति कृतज्ञता के भाव में होनेवाले वैचारिक संघर्ष को नाटक का विषय बनाकर नैतिक - अनैतिक कल्पना के कालसापेक्षता के साथ व्यक्तिसापेक्षता है। यही बात प्रस्थापित करने का प्रयास किया है। दूसरों के उपन्यास अपने नाम पर छपवा देना आनंद को अन्यायकारी, अनैतिक लगता है, पर विशाखा इसे अनैतिक नहीं मानती, क्योंकि शिवराज के प्रति उसके मन में गहरी आस्था है। पतनोन्मुख समाज व्यवस्था में, दाम्पत्य में होनेवाले अटूट संबंध निःसंदेह आशादायी है। निराशा से गिरी व्यवस्था में उनका महत्व असाधारण है। बिन बाती के दीप नाटक में इसी तथ्य को स्थापित किया है।

नाटक का विषय पुराना है पर उसमें संघर्ष के नये आयामों में प्रस्तुत कर नाटककार ने रोचकता निर्माण की है। नाटक पर यथार्थवाद का प्रभाव निखार आता है। नाटक की भाषा सरल एवं सहज है।

पति के प्रति कृतज्ञता का भाव उसके चरित्र की अमूल्य निधि है। पारंपारिक भारतीय नारी के रूप में विशाखा का चित्रण किया है। शिवराज, विशाखा प्रमुख पात्र है। शिवराज उदार और सहिष्णु है। उसने विशाखा जैसी अंधी असहाय नारी से ब्याह कर उदारता और अपने बड़प्पन का परिचय दिया है। x " बिन बाती के दीप " विशाखा की अंधी आँखों का प्रतीक है।

१-२-६ ६] बंधन अपने अपने :-

[सन १९६९]

" बंधन अपने अपने " नाटक में डॉ. जयंत की महत्वाकांक्षापूर्ण जीवन के अंत की कथा है। मनुष्य समाजप्रिय प्राणी होने के कारण समाज के बिना रह नहीं सकता। मनुष्य के संबंध में आवश्यक है प्रेम और विश्वास। डॉ. जयंत, महत्वाकांक्षी एकाकी, विध्वंसों का प्रतिक है। ज्ञान को सर्वस्व मानकर वास्तविक जिंदगी को घृणास्पद देखते है। डॉ. जयंत की प्रमुख कथा के साथ अनादि और चेतना की गौण कथा भी नाट्यकृति में प्रतिबिंबीत है। संयम के साथ अनादि और चेतना की प्रेमकथा को चित्रित किया है। अनादि का चरित्र भारतीय परंपरा, संस्कारशील, संयमित प्रेमी के रूप में चित्रित किया है। चेतना का चारित्रिक पक्ष काफी सबल है।

डॉ. शंकर शेष के इस नाटक पर मध्यप्रदेश सरकार ने ग्यारह सौ का पुरस्कार दिया है। इस नाटक के द्वारा नाटककार वर्तमान शिक्षा - व्यवस्था में प्राप्त अनैतिकता, भ्रष्टाचार, चापलूसी, प्रवृत्तिपर व्यंग्य करते है। साथ ही सरकारी

कर्मचारियों पर राजनैतिक दबाव आदि पर भी व्यंग्य करते है।

१-२-७ ७] बाढ का पानी :-
[चंदन के दीप] -१९६८

" बाढ़ का पानी : चंदन के दीप "

नाटक का मुख्य लक्ष्य समाज में बढ़ती जा रही जातिवाद की संकीर्ण विनाशक बाढ़ पर मानवता का बांध बांधकर , उसे सृजन की ओर मोड " चंदन के दीप " में पर्यवसित करना है। हमारी जाति व्यवस्था एक ऐसा पुराना किला है जो हम में हमेशा सुरक्षा का भ्रम पैदा करता रहता है, हम उसी में छिपकर रहना चाहते है पर उससे मनुष्यता का विकास नहीं होता। " बाढ़ का पानी " नाटक में जातीयता की समस्या को उठाया है।

जाति-भेद ने कितने " कर्ण " को निस्तेज किया होगा। जाति - पाँति की इसी संकीर्ण मनोवृत्ति ने एकनिष्ठ समर्पित गुरुभक्त एकलव्य को कुचल दिया। क्षात्रियत्व, गुरुत्व की छलकपट ने द्रोणाचार्य ने उसे अपाहिज बना दिया। धर्म मानने वाला हर देश है पर जात - पात का रोग केवल भारत देश में है। " जातिवाद " के अभिशाप से मुक्त होना मानव कल्याण के लिए आवश्यक है।

१-२-८ ८] खजुराहों का शिल्पी :-

राष्ट्रीय रंगमंच पर शंकर शेष को लाने का कार्य

खजुराहों का शिल्पी ने किया। राष्ट्रीय - प्रसारण में यह नाटक सभी भाषाओं में प्रसारित हुआ। सभी श्रोताओं ने इसका सहर्ष स्वागत किया। खजुराहों का शिल्पी नाटक लम्बे चिंतन और मनन की उपज है। संसार में कामभावना निरंतर गतिशील भावना बनकर स्थायी रही है। मनुष्य की सकाम और निष्काम प्रवृत्तियाँ प्राचीन काल से बनी रही है। लाख कोशिश करने के बाद भी " मोह का क्षण " निरंतर हावी रहता है। " खजुराहों का शिल्पी " इस संघर्ष को लेकर उपस्थित होता है। खजुराहों का मंदिर भारतीय स्थापत्य विद्या का मानबिंदू है। यह मंदिर जीवन में होनेवाले मोक्ष के आनंद का रहस्य है। मंदिर की रचना तीन वर्ग में बंटे लोगोंका प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर का बाहरी भाग मिथुन मुद्राओं से अंकित है। संसार में कुछ लोगों का वर्ग ऐसा है जो मिथून मुर्तियो की तरह वासना में डूब गया है। वे मांसल सौंदर्य के उपासक है। मंदिर का बाहरी हिस्सा मानव की इस कृति का प्रतिक है। संसार में कुछ लोग ऐसे है वासना में बह नही जाते। इस वर्ग के लोक कामसे मोक्ष की ओर मार्गक्रमण करते है। यह मंदिर का मध्य भाग है। तीसरे वर्ग के लोक संसार से पूर्णत: अलग है। अध्यात्म उनके जीवन का सर्वस्व है।

खजुराहों का शिल्पी की कथावस्तु एक अर्थ में खजुराहों के मंदिर निर्माण की कथा है। हेमवती की इच्छापूर्ति के लिए राजा यशोवर्धन मेघराज आनंद शिल्पी को मंदिर निर्माण की आज्ञा देते है। मॉडेल के रूप में अपनी पालित कन्याअलका को देते है। मंदिर निर्माण के काल में अलका शिल्पी मेघराज पर रीझ जाती है। वह अलका की प्रार्थना अस्वीकार कर अपने मोह के क्षण में फसना नहीं चाहता।

१-२-१ १] फन्दी :-

[सन १९७१]

डॉ॰ शंकर शेष की प्रस्थापित नाट्य परंपरा की लीक से हटकर विषय एवं नाटक मंच की दृष्टि से सर्वथा नया मार्ग प्रशस्त करनेवाली नाट्यकृति के रूपमें फन्दी का महत्व निःसंदेह असाधारण है।[१५]

" फन्दी " नाटक न्याय की प्रचलित मान्यताओं को झकझोरते मार्मिक प्रश्न सामने रखता है। यदि किसी के प्यारे कुत्ते को जहर की गोली दे दी जाती है तो उसकी पीड़ा या छटपटा हट को मिटाने के लिए उसका स्वामी गोली मारकर उसे सुला देता है। यदि पशु मनुष्य की करुणा का अधिकारी हो सकता है तो मनुष्य क्यों नहीं।[१६]

फन्दी अपने पिता की हत्या करता है। अपने पीड़ित पिता को फन्दी मुक्ति दिलाना चाहता है। पिता फन्दी से बार बार मृत्यु माँगता है। पल - पल वे मृत्यु की प्रतीक्षा करते है। फन्दी से अपने पिता की वेदना, असहाय तड़पन देखी नहीं जाती। नींद का इंजेक्शन फन्दी गरीबी के कारण ला नहीं सकता।[१७] पिताजी कहते है - " बेटा इन्जेक्शन दो या मौत दो। फन्दी मौत जरूर दे सकता था। इसलिए उनके हाथ अनजाने पिता के गले को कस लेते है। पिताजी की मृत्यु हो जाती है।

इस नाटक का केन्द्रबिंदु फन्दी है। फन्दी पिता का हत्यारा है या नहीं ? यही प्रश्न अदालत में गंभीर विवाद खड़ा करता है। पीड़ित आदमी की हत्या अपराध कैसे हो

सकती है ? इस विवाद का हल करने की चेष्टा डॉ॰ शंकर शेष ने की है।

१-२-१० **१०] एक और द्रोणाचार्य :-**

[सन १९७१]

महाभारत की प्राचीन कथा को आधुनिक जीवन से जोडने का प्रयास डॉ॰ शंकर शेष ने किया है। सुविधा मनुष्य को अपाहिज बना देती है। महाभारत "-कालीन गुरु द्रोणाचार्य अपना ~~स्वत्व~~ स्वत्व खोकर व्यवस्था के साथ बिक गये है। इसलिए एकलव्य का अंगूठा कटवाकर अर्जुन का मार्ग निष्कंटक कर देते है। इसलिए द्रौपदी के वस्त्रहरण के समय द्रौपदी की पुकार सुनकर चुप ही रहते है। इसलिए क्रोधित होकर द्रोण की पत्नी कृपी कहती है - " तुमने चुप रहकर शिक्षक को अन्याय पीने के परंपरा दी, आनेवाला इतिहास तुम्हे कोसेगा। "[१८]

सुविधा द्रोणाचार्य को राजकीय संरक्षण प्राप्त करने के लिए विवश करती है। उसी प्रकार आधुनिक द्रोणाचार्य बना अरविंद भी विवश है, क्योंकि पत्नी और पुत्र का जीवन उसके आश्रित पर है। अरविंद चंदु के न्यायपूर्ण पक्ष की बलि चढाता है। अनुराधा के चीरहरण का प्रतिकार नहीं करता। सुविधा मनुष्य को नपुंसक बनाती है। बिंब - प्रतिबिंब समान्तर दृश्य विधान के कारण अरविंद व्यवस्था के हाथों बिका

द्रोणाचार्य साबित होता है।

आज यहाँ आदर्श और नैतिकता का आडम्बर है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए शिक्षक को आदर्श और इमानदारी बेचनी पडती है। सुविधा और पद के लिए संघर्ष-रत व्यक्ति एक शिक्षक के रूप में विद्यार्थी का दिशा निर्देश कैसे कर सकता है ? वस्तुत: वह महाभारत के द्रोणाचार्य से अलग नहीं है।

एक और द्रोणाचार्य के माध्यम से शिक्षा संबंधी लोगों को जागृत करना डॉ॰ शेष का उद्देश्य है। आज भी आधुनिक समाज में, शिक्षा - क्षेत्र में गुरु द्रोणाचार्य जैसे लोगहै। यह बात समाज के विचारणीय बात है। प्राचीन परंपरा को खात्म कर स्वत्वपूर्ण गुरुजनों की परंपरा के निर्माण आधुनिक समाज की भलाई है।

१-२-११ ११] कालजयी :-

[सन १९७३]

कालजयी एक ऐसा राज्य है जो अन्याय अत्याचार से अपना राजकारोबार चलाता है। इस राजा को न राज्य की चिंता है, न प्रजा की। कालजयी के निर्मम शासन का न्यायकेतू, विजय केतू, विरोध करता है। डॉ॰ शंकर शेष ने कालजयी के माध्यम से स्वतंत्रा एवं राजतंत्रा स्वं के संघर्ष को दिखाया है। जनता के व्दारा सत्ता में परिवर्तन दिखाकर प्रजा को

शक्ति का महत्व सिध्द किया है।

न्यायकेतू, विजयकेतू, राजतंत्र छात्मकर प्रजातंत्र की माँग करते है। कालजयी की सत्ता को पलटने का प्रयास करते हैं। दुर्भाग्यवश न्यायकेतू और विजयकेतू हार जाते हैं। कालजयी चालाक है इसलिए किसी भी हालत में सत्ता में संघर्ष निर्माण करना नहीं चाहता। पदविरोध दिनोंदिन बढ़ता ही जाता है। स्वतंत्रता हाथ में तलवार लेकर कालजयी के पेट में भोंक देती है। राजनीतिक क्षणिकता का चित्रण मार्मिक बन पड़ा है। शिल्प और कथ्य की दृष्टि से यह नाटक सफल रहा है।

१२] <u>घरौंदा</u> :-

[सन १९७५]

वर्तमान जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवाला " घरौंदा " नाटक हिन्दी नाट्य - सृष्टि की अनमोल निधि है। समाज के मध्यम - वर्गीय लोगों के घर के स्वप्न की कथा को लेकर घरौंदा नाटक लिखा है। बंबई जैसे महानगरों में घर की समस्या दिन - ब - दिन विकट होती जा रही है।

यह नाटक आधुनित जीवन के एक पहलु "घर" की समस्या की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। अपना एक छोटासा घर होगा। एक छोटा - सा - घोंसला, केवल अपना, अपनी

सत्ता को एक छत। " एक कमरा हुआ तो क्या हुआ उसेही इसतरह सजाऊँगी कि तुम भी क्या कहोगे। कमरे में एक तरफ होगी बैठक/ पास ही होगा शोकेस उसमें होगी तरह तरह की गुडियाँ, शो - केस पर बड़ा - सा पितल का फ्लावर पॉट। उसमें निशिगंधा के फूल क्या यह सना सच होता है।[२०] तो नहीं। क्योंकि छाया और सुदीप घर बनाने का अपना सच करने के लिए इकठ्ठा किया पैसा एक बार बिल्डर हजम करता है। दूसरी बार छाया का भाई अमेरिका जाते वक्त ले जाता है। " घरौंदा " बनाने का उन दोनों का स्वप्न बालू के घर की तरह ढह जाता है।

नाटककार शंकर शेष ने मध्यमवर्गीय जीवन एवं उनकी सभ्यता के चित्राण इस उद्देश्य से लिखा नाटक "घरौंदा" मनुष्य जीवन की सच्ची जिंदगी बन गया है।

१-२-१२ १३] अरे ! मायावी सरोवर :-

[सन १९७४]

अरे! मायावी सरोवर की रचना नौटंकी शैली की है। नौटंकी उत्तरभारत में लोकनाट्य है। इसे " स्वांग " भी कहा करते है। नौटंकी परंपरा के नाटक मनोरंजन के माध्यम से समाज प्रबोधन औरउपदेश के लिए खेले जाते थे।

अरे! मायावी सरोवर का कथानक अत्यंत संक्षिप्त है। चेतनानगर एक समृद्ध राज्य है। वहाँ के महाराजा इल्यालू है। राजकारोबार और गृहस्थी के झंझट उसे बेचैन करते है।

मन:शांति के लिए वह शबरीनरायन की यात्रा करते समय एक विचित्र सा वन आता है। जिसमें सिंह घास खाता है, गाय, मांस भक्षण करती है, दिन में चाँद होता है, । इस विचित्र वन में ऐन्द्रजालिक सरोवर होता है। राजा नहाने के लिए सरोवर में कुदता है। राजा इस मायावी सरोवर में स्त्री रूप धारण करता है। राजा अकेला वन में रहता है, रानी सुजाता वापस अपने राज्य में चली जाती है। वन मे राजा(स्त्री रूपमे) एक ऋषिपुत्र आसक्त होता है। उसे पुत्र प्राप्ति होती है। इल्वल का पुत्र अंशुमाली दिग्विजय पर निकला है, तब ऋषिपुत्र का ? कुमार अंशुमाली के अश्व को पकडता है। फिर राजा - रानी दोनों का मिलन होता है। उस बात पर विवाद होता है कि राजपूत्र को राजगद्दीपर बिठाया जाय या ऋषिपूत्र को ? फैसला इंद्र करते है। राजा को पूर्वरूप देने का आश्वासन देते है।

पुराण, इतिहास कथा के साथ वर्तमान का समन्वय नाटककार ने किया है। यह नाटक लोकरंजन का अच्छा साधन बना है। नाटक में हास्य, - व्यंग्य प्रसंगों को चित्रित किया है। गाय को मांसाहार खाते दिखाकर जाति व्यवस्था को पवित्र - अपवित्र कल्पना पर आघात बहुत प्रभावकारी है। आधुनिक समाज में भी स्त्री - पुरुषों में वृत्तिगत खाई है। जिसमें वे एक - दूसरे के प्रति अविश्वास ईर्ष्या रखते है । जीवन क्या अपने आप में सबसे बड़ा सरोवर नहीं है ? -- सबसे आकर्षक सरोवर। जिसमें आपस में समझौता आवश्यक है।

१-२-१४ १४] रक्तबीज :-

[सन १९७६]

" रक्तबीज " नाटक में डॉ॰ शंकर शेष ने उच्च मध्यमवर्ग की स्वार्थी संकुचित मनोवृत्ति का चित्राण किया है । " रक्तबीज " नाटक में मानसिक संघर्ष दिखाया है। छोटा आदमी, बड़ा आदमी, स्त्री इस त्रिकोणात्मक संबंधों को आधारस्तंभ बनाया है। आधुनिक युग में हर छोटा आदमी बड़ा बनना चाहता है। इस महानगरीय जिंदगी में मेहनत, ईमानदारी बेकार है। ईमान का निलाम करके राजमार्ग की पगडंडिया इस्तेमाल की जाती है। बड़ा बनने की चाह में वह स्त्री की बलि देता है और टी॰ वी॰, फ्रिज, कार, कारपेट, बंगलो को अच्छी वैभवशाली जिंदगी जीना चाहता है। महानगरीय जिंदगी में जीनेवाला हर आदमी अपनी प्रतिष्ठा के लिए दूसरे का इस्तेमाल करता है । प्रतिष्ठा, बड़प्पन, महत्वाकांक्षा आदि इस दुनिया के लोगों के खून के रक्तबीज बने है।

इस नाटक की कथा में मि॰ शर्मा को निम्नवर्ग का आदमी दिखाया है। जो महत्वाकांक्षा प्रतिष्ठा पदोन्नति प्रलोभन से अस्वस्थ है। इसी बेचैनी से वह मैनेजिंग डायरेक्टर भार्गव को पार्टी के लिए घर बुलाता है। भार्गव खुश होकर मि॰ शर्मा को प्रमोशन देते है साथ ही साथ सुजाता को अपनी स्टेनो बना देते है। शर्मा निम्नवर्ग से उच्च मध्यमवर्गीय बन जाता है। मि॰ शर्मा प्रतिष्ठा हासिल करते है अपनी पत्नी के शील और चरित्र को बलि देकर। भार्गव से सुजाता गर्भवती बन जाती है। सुजाता के प्रति भार्गव का आकर्षण कम होता है।

मि॰ शर्मा सभी घटनाओं से पकरा जाता है भार्गव से प्रति शोध लेने की भावना उसके मन में प्रबल हो जाती है । आखिर वह है महानगरीय जीव रक्तबीज की संतान, उसके खून की ~~xxxxx~~ टपकती रक्त - बूंदों से हजारो रक्तबीज पैदा होते है।

नाटक के दूसरे हिस्से में शांतनु छोटा आदमी मेधावी वैज्ञानिक है। उसका अधिकारी वैज्ञानिक डॉ॰ गोयल उसका इस्तेमाल करता है। डॉ॰ शांतनु के रिसर्च पेपर्स वह अपने नाम पर छपवाता है। निराश होकर शांतनु आत्महत्या करने की सोचता है। जीवन से पलायन उसे पसंद नहीं। पर डॉ॰ गोयल शांतनु से हत्या करने के पूर्व ही खुद आत्महत्या करता है।

" रक्तबीज " नाटक में नाटयगत नये तत्वों का प्रयोग किया है। रक्तबीज नाटक में पौराणिक मिथक का प्रयोग आधुनित जीवन की व्याख्या करने के लिए किया है। नाटक आदि से अंत - तक विचार संघर्ष और चिंतन के मंथन से भरा है।

१-२-१५ १५] <u>पोस्टर</u> :-

[सन १९७७]

"पोस्टर" नाटक महाराष्ट्र की कीर्तनशैली में लिखा लोकनाटय है। नाटक की कथावस्तु कीर्तन शैली से निर्माण की है। " पोस्टर " नाटक का आरंभ गणेश वंदना से होता है। नाटक सामाजिक है। घने जंगल में बसा एक सौ या दो सौ बस्ती का गांव है। वहाँ जमींदारी की प्रथा है। गांव में छोटेलाल के पिता छन्नुलाल [illegible] के पूर्व [illegible] उन्होंने गांव को दास

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

बनाकर रखा है। भूमिहीन किसानों पर जमींदार, वन अधिकारी, अत्याचार करते है। परंतु आदिवासी मजदूर, जान जाते हैं कि उनपर अत्याचार, अन्याय, उनका शोषण हो रहा है । कल्लु, जमींदार के विरोध में पहला कदम उठाता है। अपनी पत्नी चैती को जमींदार की हवेली पर भेजने से इन्कार करता है। सभी आदिवासी मजदूर संघटित होकर जमींदारी प्रथा के विरोध में क्रांति का पहला कदम उठाते है। अन्त में गाँव शांति के लिए छोटेलाल फारेस्ट अफसर की हत्या करता है।

नाटक के संवाद सरल, सुबोध एवं संक्षिप्त है। इस प्रयोग की तुलना विजय म तेंडूलकरके मराठी नाटक घासीराम कोतवाल से की जा सकती है। मंचन की दृष्टिसे सतर्कता देखाते ही बनती है।

१-२-१६ १६] राक्षस :-

[सन १९७७]

राक्षस है हमारा विध्वसंक, वैज्ञानिक आविष्कार, एटम, युरेनियम, हाइड्रोजन, आदि परमाणू बंमों का निर्माण कर रहे है। महासत्ताधारीओं ने इस राक्षस को जन्म दिया है, पाला है, पोसा है।

विश्वासनगर एक बेकार ऐसा गाँव है, जिसे राक्षस ने परेशान किया है। सारे गाँव के लोक चिन्तित है। आखिर फैसला होता है - राक्षस के साथ समझौता किया जाय।

सामूहिक हत्या के बदले एक एक आदमी को राक्षस के पास भेजा जाता है। एक स्त्री उसका विरोध करती है। गाँव का मुखिया अपने को सुरक्षित रखकर गाँव के लोगों की बलि देता है। एक स्त्री जो अध्यापिका है वह लडकों को बलि का विरोध करती है। लडकों में संघटन करती है और महासत्ताधारी राक्षस का नाश करती है।

" राक्षस " नाटक में नाटककार शंकर शेष ने पतन और उत्थान, विध्वंस और विकास, विनाश और शांति के संघर्ष को चित्रित किया है। लोकनाट्य शैली में कथावस्तु का विकासकिया गया है। कथा को गतिशील रखकर विकास में वे योगदान देते है। नाटक में कथोपकथन पर्याप्त छोटे एवं सुबोध है।

यह समूह लोकनाट्य होने के कारण अधिक पात्र है। चार पाच प्रमुख और गौणपात्र मिलाकर बीस पात्र है।

१-२-१७ १७] कोमल गांधारे :-

[सन १९७९]

नाटककार ने " कोमल गांधार " के माध्यम से गांधारी के जीवन की कथा प्रस्तुत की है। डॉ• शंकर शेष का अधिक झुकाव महाभारत की ओर रहा। उन्होंने ऐतिहासिक मिथकीय कथा प्रसंगो को नये ढंग से अपनाया है। महाभारतकालिन गांधारी जैसे पीडितपात्र ने उन्हे बेचैन कर डाला है। गांधारी

में असामान्य दृढ़ता है। इस दृढ़ता ने डॉ॰ शेष को मोह लिया है।

गांधारी स्त्री है, इसलिए उस पर अन्याय करने का अधिकार सब का है। स्त्री का स्वाभिमान उसकी अस्मिता कोई नहीं है। राजनीती इतनी क्रूर है कि वह व्यक्ति को इतना पतित बना देती है। इस नाटक में नाटककार ने धृतराष्ट्र तथा गांधारी के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है। जीवन में पत्नीत्व से मातृत्व सबल होता है यह दिखाने का प्रयास किया है।

पति-पत्नी का जीवन संघर्ष इस नाटक में है। " गांधारी " नाटक की नायिका है। वह मानिनी है। अपने स्वतंत्र अस्तित्व की प्रेमी है। भीष्म दृढ़, दूरदर्शी एवं प्रौढ चरित्र है। शादी - ब्याह के व्यवहार में वे भावना की अपेक्षा राजनीतिक बातों का विचार अधिक करते है।

नाटक का उद्देश्य पुराण कथा को दोहराना न होकर अपने नये आयामों को प्रस्तुत करना है। डॉ॰ शंकर शेष ने इस नाटक को संवाद की शक्ति पर खड़ा किया है।

१-२-१८ १८) आधी रात के बाद :-

डॉ॰ शंकर शेष की आधी रात के बाद अन्तिम नाटयकृति है। हमारे समाज में आर्थिक समस्या के कारण

लूटपाट, चोरी आदि प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है। दूसरी ओर प्रतिष्ठा का मुखौटा पहनकर समाज का शोषण करनेवाले लोग भी मिलते है।

बंबई जैसे महानगर में इमारत का ठेकेदार सोने से भी महँगी जमीन खरीदकर आसमान चूमनेवाली इमारते बांधने का काम करता है। उस ठेकेदार को कानूनी गिरफ्तार करने को आये जज से चोर का परिचय हो जाता है। वह जज के घर चोरी करने जाता है। दोन तीन घंटे तक जंज तथा चोर की चर्चा होती है। ब्रीफकेस लेकर चोर निकल जाता है। जज नैतिक अधःपतन के भय से किसीप्रकार का मुकाबला नहीं करता है। चोर को मार डालने का प्रयास होता है। वह चोर बाल बाल बच जाता है। जज के घर से जो ब्रीफकेस चोर ले जाता है उसमें ठेकेदार के सारे जाली दस्तावेज भरे पडे थे। चोरी का उद्देश्य पंचतारांकित होटलों में शान-शौकत से शामों को गुजारनेवाले इन लोगों का पर्दाफाश करना है। इसलिए चोर जज के घर में चोरी करता है। अदालत में जज को सजा होती है।

यह असाधारण कोटी का नाटक है। सज्जन प्रतिष्ठित गुन्हेगारों के षडयन्त्रोंको पोल खोलनेवाला नाटक है।

:::::::::::

निष्कर्ष

:::::::::::

डॉ. शंकर शेष ने बाईस नाटकों का सृजन किया। कई नाटक छोड दिये जाय तो सभी नाटकों का मंचन हो चुका है।

बंबई का काल उनको नाट्ययात्रा का आखरी पड़ाव है।
डॉ· शंकर शेष ने सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक समकालीन विभिन्न विषयों को अपनाया है। प्राचीन कथा को लेकन नये संदर्भ [अर्थबोध] देने को उनको असाधारण क्षमता हो उन्हे श्रेष्ठता, सफलता प्रदान करती है।

विदयार्थी जीवन में " बिन बाती के दीप ", " बंधन अपने अपने ", " खजुराहों का शिल्पी ", " फन्दो" , " एक और द्रोणाचार्य", " कालजयी ", की रचना उन्होने की। आरंभ से शैली वैचित्र्य के साथ साथ विषय की विविधता दृष्टि गोचर होती है। अन्तिम पडाव विकास की चरमसीमा कहा जायेगा। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, आधुनिक समस्याओं को लेखन का आधार बनाया है। वे आधुनिक काल के हिन्दी नाटक के व्यापक क्षितिज प्रदान करनेवाले सशक्त नाटककार है।

:::::::::::::

संदर्भ सूचि

१] राजपथ से जनपथ जटीशाल्पो शंकर शेष
डॉ· सुरेश एवं वीणा गौतम [सन १९८६]

२] नाटककार शंकर शेष
डॉ· सुनिलकुमार लवटे,
पृष्ठ - ६

३] नाटककार शंकर शेष
डॉ· सुनिलकुमार लवटे
पृष्ठ - ६

४] डॉ· शंकर शेष का नाटक साहित्य
डॉ· प्रकाश जाधव
पृष्ठ - १७

५] सारिका अंक ,
पृष्ठ - २२,
डॉ· शंकर शेष का नाटक - साहित्य
डॉ· प्रकाश जाधव,
पृष्ठ - १७
साहित्य रत्नालय
३७/५० गिलिस बाजार
कानपूर [१९८८]

६] नाटककार शंकर शेष
डॉ· सुनिलकुमार लवटे

A
11986

७] बाढ़ का पानी - डॉ॰ शंकर शेष
पृष्ठ - ६॰

८] नाटककार शंकर शेष
सुनिलकुमार लवटे
पृष्ठ - ५

९] राजपथ से जनपथ नाट्यशिल्पी शंकर शेष
डॉ॰ सुरेश एवं वीणा गौतम
पृष्ठ - ४०

१०] " " -----" "------"-----"-----

११] पंचतंत्र "- डॉ॰ शंकर शेष
पृष्ठ - ७

१२] राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष
डॉ॰ सुरेश एवं डॉ॰ वीणा गौतम
पृष्ठ - १७

१३] राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष
डॉ सुरेश एवं डॉ वीणा गौतम
पृष्ठ - ६३, पृष्ठ - ६३, ६५

१४] नयी सभ्यता के नये नमूने, - डॉ॰शंकर शेष
अप्रकाशीत पांडु लिपिसे

१५] नाटककार शंकर शेष - सुनिलकुमार लवटे,
पृष्ठ - ३३, ३४

१६] नाटककार शंकर शेष - सुनिलकुमार लवटे
पृष्ठ - ४३

१७] स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - डॉ॰ रोताकुमार
पृष्ठ - १०४, १९५ ,

१८] फन्दी - डॉ॰ शंकर शेष,
पृष्ठ - ३०

१९] राजपथ से जनपथ नटीशिल्पी - डॉ शंकर शेष
डॉ॰ सुरेश एवं वीणा गौतम
पृष्ठ - ११०

२०] स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक अरोताकुमार
पृष्ठ १००

२१] घारौंदा - डॉ॰ शंकर शेष
पृष्ठ ४२

२२] अरे मायावी सरोवर - डॉ शंकर शेष
पृष्ठ - १००

0000